गृह वाटिका

में अधिक उत्पादन हेतु उन्नत तकनीकियाँ एवं महत्व

सोमा श्रीवास्तव, राज सिंह एवं भगवान सिंह

2014

भाकृअनुप
ICAR

केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान
आई.एस.ओ. 9001 : 2008
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)
जोधपुर 342 003

परिचय

सब्जियों की खेती को उनके उगाने के उद्देश्य, विधि, प्रबंध व्यवस्था एवं व्यावसायिक स्तर के आधार पर विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया जाता है। गृह वाटिका में सब्जी उत्पादन का प्रचलन प्राचीन काल से चला आ रहा है इसमें सब्जी उत्पादन का मुख्य उद्देश्य यह होता है कि पूरे परिवार को साल भर ताजी शाक–सब्जी मिलती रहे। इसमें शाक–सब्जियों के अलावा फल–फूल आदि को भी उगाया जा सकता है। इसी कारण इसे परिवार आधारित रसोई उद्यान अर्थात गृह वाटिका या किचन गार्डन भी कहते हैं। इस प्रकार के सब्जी उत्पादन मे मुख्य ध्येय आर्थिक लाभ न होकर परिवार के पोषण स्तर को बढ़ाना तथा घर में ही ताजी शाक–सब्जी का उत्पादन करना होता है। इसके द्वारा आर्थिक लाभ भी कमाया जा सकता है। सब्जियों का चयन परिवार के सदस्यों की इच्छा अनुसार किया जाता है। घर के चारों और खाली पड़ी भूमि में छोटी–छोटी क्यारियाँ बना ली जाती हैं। क्यारियों में फसल चक्र अपनाए जाते हैं तथा फल–फूल एवं शाक–सब्जी का उत्पादन किया जाता है।

गृह वाटिका लगाने के लाभ

- परिवार की आवश्यकतानुसार ताजी एवं स्वादिष्ट शाक–सब्जियाँ साल भर उपलब्ध होती रहती हैं।
- घर के चारों ओर खाली पड़ी हुई भूमि में सरलता से की जा सकती है।
- घरेलू कार्यो में प्रयुक्त हो चुके जल का पौधों की सिंचाई में सदुपयोग हो सकता है एवं घर के कूड़े–करकट का कम्पोस्ट खाद बना कर प्रयोग किया जा सकता है।
- सब्जी खरीदने के लिए बाजार नहीं जाना पड़ता बल्कि घर में ही ताजी, स्वादिष्ट शाक–सब्जियां नियमित रूप में मिलती रहती हैं।
- बाजार की तुलना में सस्ती एवं उत्तम गुणवत्ता वाली सब्जियां मिलती हैं।
- गृह वाटिका में उगी सब्जियों में जहरीली दवाइयों एवं कीटनाशकों का प्रभाव नहीं होता है, जो कि बाजार से खरीदी हुई सब्जियों में हो सकता है।
- गृह वाटिका की सब्जियों में नकली रंग, रसायनों, एवं उन संक्रामक रोगों के जीवाणुओं की उपस्थिति का भय नहीं रहता जो बाजार से खरीदी गयी सब्जियों में हो सकता है।
- घर के बच्चों व युवाओं को भी यह कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी।
- लकड़ी के डिब्बों, गमलों, बेकार टिनों एवं मकान की छतों पर सफलतापूर्वक उगाई जा सकती है।
- कीमती कृषि औजारों की आवश्यकता नहीं होती है। घरेलू औजारों को प्रयोग में ला सकते हैं।
- इसे एक मन भावन शौक के रूप में अपनाया जा सकता है।

गृह वाटिका के लिये उचित स्थान

- गृह वाटिका का स्थान घर के निकट होना चाहिए।
- घर के आगे या पिछवाड़े की पहुँच से दूर व पूर्णतया खुला एवं सूर्य के प्रकाश की पर्याप्त पहुँच वाले स्थान का चयन करना चाहिए।
- गृह वाटिका के लिए दोमट मिट्टी जिसमें जीवांशों की अच्छी मात्रा हो, उपयुक्त रहती है।
- इसके अतिरिक्त सब्जियों को उगाने के लिए पर्याप्त सिंचाई देना भी आवश्यक होता है, अतः सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता भी होनी चाहिए।

गृह वाटिका में क्या-क्या उगाएँ

यदि आपके पास खुला प्लाट हो तो उगाने वाली सब्जियों की कोई सीमा नहीं है। फल वाले पेड़ जैसे पपीता, नींबू व अमरूद आदि भी शाक–सब्जियों के साथ–साथ उगाए जा सकते हैं। पर्याप्त खुला स्थान नहीं हैं तो आप सीमित तरीके से गृह–वाटिका लगा सकते हैं जैसे टमाटर, मिर्च, सीताफल, करेला, मटर, मेथी, पालक, मूली, धनियाँ आदि।

गृह-वाटिका में पालक (सुपर ग्रीन) उत्पादन

गृह-वाटिका में टमाटर (हिमसोना) उत्पादन

गृह-वाटिका में लौकी उत्पादन

गृह-वाटिका में भिंडी (मेघा-501) उत्पादन

गृह वाटिका में शाक–सब्जियों को तीन बार बोया जा सकता है, जो क्रमवार निम्नलिखित हैः–

खरीफ वाली सब्जियाँ– इन्हें जून–जूलाई में बोया जा सकता है। इस समय भिंडी, लौकी, करेला, टिंडा, तोरई, बैंगन, टमाटर, ग्वार, लोबिया, मिर्ची, अरबी आदि सब्जियों की खेती की जा सकती है।

रबी वाली सब्जियाँ– इन्हें सितंबर–अक्तूबर में उगाया जाता है। इस समय बैंगन, सरसों, मटर, प्याज, लहसुन, आलू, टमाटर, शलजम, फूलगोभी, बंदगोभी, चना आदि सब्जियों की खेती की जा सकती है।

जायद वाली सब्जियाँ– इन्हें फरवरी–मार्च में उगाया जाता है। इस समय भिंडी, ककड़ी, खीरा, लौकी, तोरई, टिंडा, अरबी, तरबूज, मतीरा, खरबूजा, बैंगन आदि सब्जियों की खेती की जा सकती है।

गृह वाटिका लगाने के लिए भूमि की तैयारी

जिस स्थान पर गृह वाटिका लगानी हो वहाँ की मिट्टी में जल एवं वायु का प्रवाह अच्छा होना चाहिए। इसलिए गृह वाटिका लगाने से पहले भूमि को तैयार कर लेना महत्वपूर्ण है। मिट्टी जितनी भुरभुरी, कार्बनिक खाद एवं जीवांश तत्वों से भरपूर होगी, पैदावार भी उतनी ही अच्छी मिलेगी। यदि बड़े क्षेत्रफल में सब्जियों लगानी हो तो इसके लिए एक जुताई डिस्क हैरो तथा 2–3 जुताई मिट्टी पलटने वाले हल या कल्टीवेटर से करनी चाहिए। इसके बाद अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की खाद 1–1.5 टन प्रति हैक्टेयर के हिसाब से मिट्टी में अच्छी तरह मिलानी चाहिए। घर में थोड़े स्थान में सब्जियाँ उगाने के लिए फावड़ा या कस्सी का उपयोग कर मिट्टी को अच्छी तरह से भुरभुरा कर क्यारियाँ बना लेनी चाहिए तथा गोबर की खाद को क्यारियों में डाल कर मिश्रित कर लेना चाहिए। गमले तैयार करते समय भी कस्सी या खुरपी से मिट्टी अच्छी तरह भुरभुरी कर तथा गोबर की खाद मिलाकर गमले तैयार कर लेने चाहिए।

खाद एवं उर्वरक

खाद एवं उर्वरक का अच्छी पैदावर प्राप्त करने में अत्यधिक महत्व है। इसके लिए आवश्यक है कि मिट्टी में कार्बनिक खाद का प्रयोग हो। खाद मिट्टी की दशा सुधारती है व पौधों को आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति भी करती है। इसके लिए गृह–वाटिका के एक कोने में कम्पोस्ट खाद का निर्माण भी किया जा सकता है।

कम्पोस्ट बनाने की विधि

घर का कूड़ा–करकट, नाली का कचरा, मलमूत्र, भूसा, कागज की रद्दी आदि पदार्थों के बैक्टीरिया एवं फँजाई द्वारा विघटन / सड़न से बना हुआ पदार्थ कम्पोस्ट कहलाता है। गृह–वाटिका के क्षेत्रफल के आधार पर एक 6 फुट लम्बा, 3 फुट चौड़ा एवं 3 फुट गहरा गड्ढा खोद लें।

ऐसा करने से पोषक तत्वों के घुलकर बह जाने की क्षति को कम किया जा सकता है। गड्ढे को फलों एवं सब्जियों के छिलकों, सब्जियों के पत्तों एवं रसोई के कूड़े–करकट से भर देवें। 25 से 50 ग्राम यूरिया फैला दें और पानी का सतह पर छिड़काव कर दें। यदि गोबर आसानी से मिल जाए तो पौधों के अवशिष्ट के ऊपर 2.5 से 5.0 से. मी. मोटी गोबर की परत बिछा दें। कम्पोस्ट गड्ढे में यूरिया मिलाने से दो उद्देश्य पूरे होते हैं। पहला ये जीवाणुओं के लिए ऊर्जा का कार्य करता है दूसरा यह जैवीय पदार्थो को जल्दी सड़ाकर खाद में सिर्फ नाइट्रोजन ही नहीं बल्कि फासफोरस और गंधक जैसे तत्वों की वृद्धि करता है। खाद को 2 महीने तक सड़ने देना चाहिए। गृह–वाटिका मे इस प्रकार 2–3 गड्ढे बना लेना चाहिए ताकि उनका बारी–बारी से प्रयोग किया जा सके।

पारम्परिक गोबर की खाद

कम्पोस्ट खाद

गृह वाटिका में क्यारी बनाकर शाक-सब्जियाँ उगाना

- फावड़े या खुरपी से 10–15 से.मी. मिट्टी खोद लें। अच्छी तरह सड़ी हुई खाद मिला दें। क्यारी को समतल बनायें और उसके चारों ओर बांध बना दें।
- उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग करें।
- उचित समय एवं सही तरीके से बुवाई के लिए सब्जी की किस्म के आधार पर निम्नलिखित दो पद्धतियों में से एक चुनें।

गृह वाटिका में सब्जियाँ उगाने के लिए सब्जी की किस्म के आधार पर दो प्रकार से बुवाई की जा सकती है।

बीज द्वारा बुवाई

मूली, शलजम, मेथी, पालक, खीरा, करेला, लौकी, कद्दू, टिंडा, सेम, भिंडी आदि सब्जियों के बीज मिट्टी में सीधे ही बोये जाते हैं। बुवाई से पहले बीजों का थीरम या केपटान 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार कर लेना अच्छा रहता है। अच्छी व जानी–मानी कृषि कंपनियों के बीज लेने पर सामान्यता बीज पहले से ही उपचारित होते हैं अतः उनका पुनः बीजोपचार करने की आवश्यकता नहीं होती है। बुवाई करने से पहले बताई गयी विधि द्वारा भूमि जुताई कर तैयार कर लेना चाहिए। खाद तथा उर्वरक की पहली खुराक सब्जी की किस्म के अनुसार निर्दिष्ट मात्रा में अंतिम जुताई के समय मिट्टी में छिड़कर देनी चाहिए तथा इसके तुंरत बाद सिंचाई करनी चाहिए जिससे उर्वरक अच्छी तरह प्रभावी हो जाए। इसके बाद ही बुवाई करनी चाहिए। सब्जियों के बीजों की

बुवाई पंक्तियों में करनी चाहिये तथा कतार से कतार एवं पौधे से पौधे की बीच उचित स्थान छोड़ना चाहिये। फैलने वाले पौधो के लिए कतार से कतार की दूरी अधिक रहती है ताकि पौधे को बढ़ने के लिए उचित स्थान मिल सके। विभिन्न सब्जियों में पौधे से पौधे की दूरी एवं कतार से कतार की दूरी अलग–अलग होती है अतः इसको ध्यान में रखते हुए बुवाई करनी चाहिए। उर्वरक की दो अन्य खुराकें 1 महीने बाद तथा अगली खुराक समान्यतया अगले 1–1.5 महीने बाद फूल आने के समय दी जाती है। इसके बाद ऋतु एवं आवश्यकतानुसार समय–समय पर सिंचाई करते रहना चाहिए। सब्जियों को पहले 40–50 दिनों तक खरपतवार मुक्त रखना आवश्यक है अतः समय–समय पर कस्सी द्वारा निराई–गुड़ाई करते रहें। बीजों को पंक्तियों में बोने से सब्जी पक जाने के बाद काटने की सुविधा रहती है। सब्जियों की उचित समय पर तोड़ाई कर लेनी चाहिए।

फफूंदीनाशी द्वारा बीजोपचार

रोपाई द्वारा

कुछ सब्जियों जैसे टमाटर, फूलगोभी, मिर्च, बैंगन, प्याज, पोदीना आदि फसलें सीधे बीज द्वारा बुवाई न करके बीज उगने के बाद उस पौधे की रोपाई करने से अधिक बढ़ती है। इसलिए ऐसी फसल के लिए बीज, उचित रूप से खाद लगी हुई क्यारियों में बोकर पौधे तैयार किए जाते हैं।

नर्सरी तैयार करने की विधि

रोपाई करने के लिए पौधे तैयार करने के लिए नर्सरी बनाने हेतु 4–5 बार गुड़ाई करके मिट्टी को अच्छी प्रकार से भुरभुरा बना लेना चाहिये और गोबर की खाद आदि उचित मात्रा में मिला दें। इसके पश्चात् बीजों को सब्जी की किस्म के आधार पर निश्चित दूरी में बो देना चाहिए। बीजों को 1.5 से.मी. से अधिक गहराई में नहीं बोना चाहिए अन्यथा अंकुरण होने में समस्या आती है और बीज देर से अंकुरित होते हैं। बीज बोते समय एक मुट्ठी भर डीएपी एवं बीज उगने के 5–6 दिन बाद यूरिया 2 मुट्ठी भर प्रति 10 वर्ग मीटर में लगाने से पौधों की बढ़वार अच्छी रहती है। बीज को क्यारियों में बोने के बाद हल्की सिंचाई करनी चाहिए। बुवाई के 1–2 हफ्ते में बीज अंकुरित हो जाते हैं और 1 महीने में रोपाई के लिए तैयार हो जाते हैं।

रोपाई करना

रोपाई करने के 1–2 दिन पहले सिंचाई देनी चाहिए इससे मिट्टी नम हो जाती है और पौधों की जड़े आसानी से बिना अधिक नुकसान के मिट्टी से बाहर निकल आती है। पौधों की रोपाई करने से पहले खेत/क्यारियाँ/थाले तैयार कर लेने चाहिए। इसके लिए पहले बताई गयी विधि के अनुसार जुताई करके तथा उर्वरक डाल कर मिट्टी को तैयार कर लेना चाहिए। उर्वरक की पहली खुराक सब्जी की किस्म के अनुसार निर्दिष्ट मात्रा में रोपाई के पहले मिट्टी में छिड़ककर दे देनी चाहिए तथा इसके तुरंत बाद सिंचाई करनी चाहिए जिससे उर्वरक अच्छी तरह प्रभावी हो जायें। इसके 1–2 दिन बाद पौधों की रोपाई करनी चाहिए। रोपाई करने के लिए 15–20 से.मी. ऊँची व 1.25 मीटर चौड़ी तथा आवश्यकतानुसार लम्बी क्यारियाँ बना ली जाती हैं। दो क्यारियों के बीच 30 से.मी. चौड़ी नाली छोड़ देते हैं, जिससे कि निराई–गुड़ाई व पानी की निकासी में आसानी रहती है। पौधों को शाम के समय रोपना चाहिए तथा रोपने के बाद हल्की सिंचाई देनी चाहिए। सब्जियों के पहले 40–50 दिनों तक खरपतवार मुक्त रखना आवश्यक है अतः समय–समय पर खुरपी द्वारा निराई गुड़ाई करते रहें। उर्वरक की दो अन्य खुराकें 1 महीने बाद तथा अगली खुराक समान्यता अगले 1–1.5 महीने बाद फूल आने के समय दी जाती है। इसके अतिरिक्त ऋतु एवं आवश्यकतानुसार समय–समय पर सिंचाई करते रहना चाहिए।

कीट एवं व्याधि नियंत्रण

- मिट्टी में दीमक की उपस्थिति शुष्क क्षेत्रों में बहुत बड़ी समस्या है। इसके निदान के लिए क्यूनाल्फोस या क्लोरपाइरीफोस 20–25 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से भूमि का उपचार करना चाहिए।
- सब्जियों में कीट व व्याधि की समस्या अक्सर देखी जाती है, अतः अगर ऐसी समस्या अधिक मात्रा में आए तो सब्जी की किस्म के अनुसार उचित जानकारी लेकर कीटनाशक एवं रोग नियंत्रक का छिड़काव करना चाहिए।
- गृह वाटिका में भिण्डी, बैंगन अथवा टमाटर में अधिकतर फल छेदक व सूंडी का प्रकोप देखा जाता है। यह कीट फल के अन्दर घुसकर उसे काटकर हानि पहुँचाते हैं। सब्जियों में इसके नियंत्रण के लिए मैलाथियान 50 ईसी या ऐंडोसल्फान 35 ईसी 1–2 मिली प्रति लीटर पानी की दर से सुबह या शाम के समय छिड़काव करना चाहिए।
- गृह वाटिका से संबंधित फसलों में प्रायः जैसिड्स (हरा तेला) का भी प्रकोप देखा जाता है। ये छोटे–छोटे हल्के हरे रंग के कीट होते हैं तथा पत्तियों का रस चूसकर उन्हें सुखा देते हैं व पत्तियाँ सूखकर झड़ जाती हैं। इसके नियंत्रण के लिए मैलाथियान 50 ईसी की 1 मिली प्रति लीटर या डाइमिथोएट 30 ईसी 2 मिली प्रति लीटर या इमिडाक्लोरपिड 200 एसएल 0.3 मिली प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये।
- मटमैले–भूरे रंग के महीन कीट जिन्हें चैपां या मोयला (एफिड्स) के नाम से जाना जाता है अक्सर पत्तेदार सब्जियों में हानि पहुँचाते हैं। यह कीट पत्तियों का रस चूसकर फसल की वृद्धि एवं उत्पादन को प्रभावित करता है। इनके नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोरपिड 200 एसएल 0.3 मिली प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर या छिड़काव करना चाहिए।
- मूली, बैंगन, मिर्च आदि में सफेद मक्खी का प्रकोप देखा जाता है, इसके नियंत्रण के लिए मैलाथियान 50 ईसी 2 मिली प्रति लीटर मात्रा का 400–500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़कावें।
- गृह वाटिका में नीम की खली के प्रयोग से भी कीड़ों व बीमारियों की रोकथाम में मदद मिलती है।
- आर्द्र विगलन टमाटर, बैंगन व मिर्च में लगने वाली बहुत ही खतरनाक बीमारी है। इस बीमारी के प्रकोप से नर्सरी मे पौधों की जड़े सड़ जाती हैं तथा पौधे मर जाते हैं। इस बीमारी की रोकथाम के लिए ट्राइकोडरमा विरीडी की 4 ग्राम/किलो बीज या थिरम की 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर नर्सरी में बुवाई करनी चाहिए।
- बैक्टीरियल विल्ट बीमारी टमाटर, बैंगन इत्यादि फसलों में भूमि में अधिक नमी तथा तापमान के कारण लगती है। इस बीमारी के कारण पूरा पौधा सूख जाता है। इसके नियंत्रण के लिए उचित फसल चक्र अपनाना चाहिए तथा पौधों को खेत में रोपने से पहले स्ट्रेप्टोसाइक्लीन की एक ग्राम मात्रा को 40 लीटर पानी में मिलाकर घोल में 30 मिनट तक उपचारित कर रोपना चाहिये।
- सूखे की स्थिति में चूर्णी फफूँदी (पाउडरी मिल्डयू) का सबसे अधिक प्रकोप होता है। इस बीमारी के कारण पत्तियों एवं तनों पर फफूँद के सफेद चूर्ण की परत आ जाती है। प्रभावित पत्तियाँ छोटी, कड़ी व नुकीली रह जाती हैं तथा पौधे की बढ़वार भी प्रभावित होती है। इसके नियंत्रण के लिए केराथेन की 1 मिली प्रति लीटर पानी या घुलनशील सल्फर की 3 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये। सल्फर पाउडर को भुरकाव करके भी चूर्ण फफूँदी की रोकथाम की जा सकती है।
- अगेता झुलसा टमाटर, बैंगन की सामान्य बीमारी है। इसका प्रयोग प्रारम्भिक अवस्था में पत्तियों पर होता है, जिसके कारण पत्तियों पर धब्बे पड़ जाते हैं। पुरानी पत्तियों पर छोटे व काले रंग के धब्बे बाद में पीले पड़ जाते हैं तथा अधिक प्रकोप के कारण पत्तियाँ सूख जाती हैं। इसके नियंत्रण के लिए प्रभावित पौधे उखाड़ देने चाहिये तथा मैनकोजेब डीफोलेटान या डाइथेन एम 45 की 2.5 मिली मात्रा को प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये। इसके अतिरिक्त फाइटोलौन 2 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में 7–8 दिन के अंतर पर छिड़क कर भी इस रोग के प्रकोप से छुटकारा पाया जा सकता है।

कीटनाशी व फफंदीनाशी के प्रयोग में बरती जानने वाली सावधानियाँ

- कीटनाशी या फफूंदीनाशी के टिन व डिब्बों को बच्चों व जानवरों की पहुँच से दूर रखना चाहिए।
- कीटनाशी या फफूंदीनाशी का छिड़काव करते समय हाथों में दस्ताने पहनना चाहिए तथा मुँह को मास्क व आंखों को चश्मा पहन कर ढक लेना चाहिए जिससे कीटनाशी या फफूंदनाशी त्वचा व आंखों में न जाए।
- कीटनाशी या फफूंदीनाशी का छिड़काव शाम के समय जब हवा का वेग अधिक न हो तब करना चाहिए अथवा हवा चलने के विपरित दिशा में खड़े होकर करना चाहिए।
- कीटनाशी या फफूंदीनाशी का छिड़काव करने के बाद हाथ पैर व कपड़ों को अच्छी तरह धो लेना चाहिए।
- कीटनाशी या फफूंदीनाशी के खाली टिन व डिब्बों को मिट्टी में दबा देना चाहिए।

सब्जियों को गमलों डिब्बों आदि में सीमित स्तर पर उगाना

सभी प्रकार की सब्जियों को गमलों, डिब्बों, पोलीथीन के थैलों में उगाना संभव नहीं है। परन्तु अगर जगह की कमी हो तो थोड़े से प्रयास से घर के अंदर ही गमलों में कुछ सब्जियाँ उगाई जा सकती हैं। जैसे गहरी जड़ो वाली फसलों (जैसे बैंगन, भिंडी, टमाटर, धनियाँ, तरोई, लौकी, करेला आदि) या जमीन के अन्दर पैदा होने वाली सब्जियाँ, जिनका जमीन के लगा हिस्सा खाने के काम आता है जैसे आलू, शक्करकन्द आदि।

सफल पैदावार लेने के लिए निम्न सुझावों को ध्यान में रखें

- सही किस्म की सब्जी चुने जो अत्यधिक ज्यादा जगह न लेती हो।
- सब्जियों के पौधों की संख्या सीमित हो।
- गमलों आदि का समुचित जल निकास अति आवश्यक है।
- प्लास्टिक के गमलों की जगह मिट्टी के गमलों में पौधे लगाएँ।

गमलों के पौधों से भरपूर उपज लेने के लिए मुख्य जानकारियाँ

गमले तैयार करना

- गमलों, थैलों, टिनों आदि में पानी की निकासी के लिए तली में 1–2 सुराख कर दें।
- पेंदे पर कंकड़–पत्थरों की एक पतली परत लगाएं फिर उसके ऊपर रेत की दूसरी परत से ढक दें पानी लगाने के लिए ऊपर का 2.5 से 5.0 से.मी. स्थान खाली छोड़कर गमले का शेष भाग मिट्टी से भर दें।

बीज/पौध की बुआई

- बुआई से पहले उर्वरक एवं खाद ऊपर की कुछ से.मी. मिट्टी में अच्छी तरह मिलाएं।
- बीज की बुआई 2.5 से.मी. गहराई में करें।
- उचित मात्रा में फव्वारे से सिंचाई करते रहें।

इस प्रकार स्थान की उपलब्धता के अनुसार गृह वाटिका में विभिन्न शाक–सब्जियों एवं फलों का उत्पादन किया जा सकता है। इससे न केवल साल भर ताज़ी एवं उत्तम गुणवत्ता वाली फल सब्जियाँ खाने को मिलती हैं बल्कि पैसे की बचत भी होती है और परिवार का पोषण स्तर भी सुधरता है। यह घर के सभी सदस्यों द्वारा आसानी से मिल–जुल कर किया जा सकता है तथा आज के युग में जब बाजार में मिलावट एवं विषैले तत्वों युक्त खाद्य पदार्थो की भरमार है यह एक आदर्श विकल्प है।

सारणी: सब्जियों की कार्यमाला

फसल	किस्म	बुआई का समय	प्रतिरोपण का समय	बीज दर प्रति वर्ग मीटर (ग्राम में)	बुआई की विधि	दूरी (से.मी.) कतार से कतार एवं पौध से पौध	कटाई का समय	संभावित उपज वर्ग मीटर (किलोग्राम)
करेला	पूसा दौमौस्मी कायम्बटूर लांग, प्रिया, ग्रीन लौंग	फरवरी–मार्च जून–जुलाई	–	0.50	सीधे बीज लगाएँ	120–90	मई–जुलाई	25–30
बैंगन	पूसा क्रांति, पूसा हाइब्रिड–6, पूसा परपिल लांग, पूसा परपिल कलस्टर	जनवरी–फरवरी मई–जून अक्टूम्बर–नवम्बर	जनवरी, फरवरी, मार्च	0.05	बीज से पौधे तैयार करने के पश्चात्	60–45	अप्रेल–जून मार्च–मई	40–50
गाजर	पूसा केसर, पूसा वृष्टि, पूसा सलेक्शन–5	अगस्त–अक्टूम्बर	–	0.50	सीधे बीज लगाएँ	30–70	दिसम्बर–फरवरी फरवरी–मार्च	35–40
लौकी	पूसा समर, प्रोलिफिक–लांग, पूसा नवीन, पूसा समर, प्रोलिफिक राउन्ड, पूसा मेघदूत	फरवरी–मार्च जून–जूलाई	–	0.50	सीधे बीज लगाएँ	180–90	अप्रेल–जून अक्टूबर–दिसम्बर	30–40
मिर्च	एन.पी. 46–ए, पी.सी.–1, पूसा ज्वाला, जी–3	नवम्बर–जनवरी मई–जून	जनवरी–मार्च जून–जुलाई	0.15	बीज से पौधे तैयार करने के पश्चात्	45–45	अप्रेल–जून सितम्बर–नवम्बर	15–20
खरबूजा	हरा मधु, पूसा मधुरस	जनवरी–फरवरी	–	0.20	सीधे बीज लगायें	120–90	अप्रेल–जून	
भिंडी	पूसा मखमली, परभनी क्रांति, पूसा सावनी, मेघा	फरवरी–मार्च जून–जूलाई	–	2.0	सीधे बीज लगायें	30–15 60–30	मार्च–जून अगस्त–नवम्बर	15–20
पालक	पूसा ज्योति, आल ग्रीन, सुपर ग्रीन, जोबनेर ग्रीन	सितम्बर–नवम्बर फरवरी	–	3.0	सीधे बीज लगायें	30–35	नवम्बर–फरवरी मार्च–अप्रेल	15–20
तोरई	पूसा चिकनी, सत पुतिया, पूसा नसदार	फरवरी–मार्च	–	0.50	सीधे बीज लगायें	120–90	अप्रेल–जून	15–20
टिन्डा	टिन्डा लुधियाना, अरका टिन्डा, बीकानेरी ग्रीन, हिसार सलेक्सन–1	फरवरी–मार्च जून–जुलाई	–	0.50	सीधे बीज लगायें	100–25	मई–जून सितम्बर–अक्टूबर	15–20
टमाटर	पूसा रूबी, पूसा अर्ली डवार्फ, हिमसोना, रश्मि, सोनाली, पूसा हाइब्रिड–2	अगस्त–सितम्बर दिसम्बर–जनवरी जुलाई–अगस्त नवम्बर–दिसम्बर	–	0.05	बीज से पौधे तैयार करने के पश्चात्	60–30	अक्टूबर–दिसम्बर अप्रेल–जून	10–15
तरबूज	सुगर बेबी, अरका ज्योति	जनवरी–मार्च		0.50	सीधे बीज लगायें	120–90	मई–जून	20–25

प्रकाशक : निदेशक, केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर 342 003
सम्पर्क सूत्र : दूरभाष +91–291–2786584 (कार्यालय) +91–291–2788484 (निवास), फैक्स: +91–291–2788706
ई–मेल : director@cazri.res.in
वेबसाईट : http://www.cazri.res.in
सम्पादन समिति : एस.के. जिन्दल, निशा पटेल, पी.के. रॉय एवं हरीश पुरोहित
काजरी किसान हेल्प लाईन : 0291–2786812